ब्रह्मास्त्र :

बड़ी सुण्डियों/इल्लियों के नियंत्रण

- 10 ली0 देशी गाय का मूत्र।
- 5 किग्रा नीम के पत्ते।
- 2–2 किग्रा अमरूद, पपीता, अरण्डी की चटनी।

विधि :

इन वनस्पतियों की चटनी को गौ मूत्र में मिलाकर धीमी ऑच पर एक उबाल आने तक उबाले इसके बाद 48 घण्टे तक ठण्डा होने के लिए रख दे। 2.5 से 3.5 ली0 घोल को 100 ली0 पानी में मिलाकर एक एकड़ की फसल पर छिड़काव करें। इस घोल का प्रयोग 6 माह तक किया जा सकता है।

दशपर्णी अर्क :

सभी प्रकार की सुण्डी/इल्लियों के नियंत्रण।

- 200 ली0 पानी।
- 2 किग्रा देशी गाय का गोबर।
- 2–2 किग्रा0 वनस्पतियों के पत्ते जैसे नीम, करंज, अरण्डी, सीताफल, तुलसी, धतूरा, आम, अमरूद, कडुआ करेला, अनार, पपीता इत्यादि।
- 500 ग्रा0 हल्दी पाउडर।
- 500 ग्राम अदरक की चटनी।
- 10 ग्रा0 हींग पाउडर।
- 1 किग्रा0 तम्बाकू।
- 1 किग्रा0 हरी मिर्च की चटनी।
- 1 किग्रा0 देशी लहसुन की चटनी।

विधि :

इन सब को मिलाकर लकड़ी से अच्छे से घोले, बोरे से ढककर छाया में 30 से 40 दिन रखे व दिन में 2 बार घोले इसके बाद कपड़े से छानकर उसका भण्डारण करे। प्रति एकड़ 200 ली0 पानी में 6 ली0 दशपर्णी अर्क मिलाकर प्रयोग करे।

सम्पर्क सूत्र

डा0 अशोक कुमार
अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, दलीपनगर

डा0 अरविन्द कुमार सिंह
समन्वयक, प्रसार निदेशालय

डा0 खलील खान
मृदा वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, दलीपनगर

प्राकृतिक खेती के अवयव

फसल सुरक्षा (कीट प्रबंधन)

नीमास्त्र बनाने की विधि और फसलों में इसका प्रयोग तथा लाभ

कृषि विज्ञान केन्द्र दलीप नगर, कानपुर देहात

प्रसार निदेशालय

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौ0 वि0वि0 कानपुर–208002

परिचय

नीमास्त्र एक कीटनाशक है जिसे नीम की हरी पत्तियाँ या सूखे फल, गौ मूत्र, गोबर एवं पानी की सहायता से बनाया जाता है। इसका इस्तेमाल फसलों में लगने वाले कीटों के नियंत्रण के लिए किया जाता है। नीमास्त्र रस चूसने वाले कीड़ों, छोटी सुण्डी/इल्लियाँ के लिए उपयोगी है।

नीमास्त्र बनाने की विधि :

नीमास्त्र को आसानी से घर पर बनाया जा सकता है। इसे बनाने के लिए कुछ सामग्री की आवश्यकता होती है। अगर यह सामग्री उपलब्ध हो तो इसे कोई भी आसानी से बना सकता है।

नीमास्त्र बनाने के लिए आवश्यक सामग्री :

सामग्री	मात्रा
देशी गाय का गोबर	1 किग्रा0
देशी गाय का गौमूत्र	05 ली0
पानी	100 ली0
नीम की हरी पत्तियाँ/सूखे फल	05 किग्रा0

200 ली0 प्लास्टिक के ड्रम में नीम की पत्ती एवं सूखे फलों को कूटकर पानी में मिलाएं तत्पश्चात् देशी गाय का गोबर और गौ मूत्र का मिश्रण मिला लें। मिश्रण को 48 घण्टे बोरे से ढककर सुबह–शाम घड़ी की सुई की दिशा में घुमायें तत्पश्चात् कपड़े से छानकर फसलों पर छिड़काव करें।

सावधानियाँ :

- नीमास्त्र को छाँव में रखें और धूप से बचायें।
- इस बात का ध्यान रखें कि नीमास्त्र पर वर्षा का पानी न पड़े।
- गौ मूत्र को प्लास्टिक के बर्तन/ड्रम में रखें।

प्रयोग करने अवधि :

नीमास्त्र का प्रयोग 6 महीने तक कर सकते हैं यानि कि इसे 6 महीने तक भण्डारित करके रख सकते है।

नीमास्त्र का प्रयोग :

नीमास्त्र का प्रयोग फसलों में चूसने वाले कीड़ों, छोटी सूड़ियों/इल्लियों के लिए किया जाता है जब फसलों में चूसने वाले कीड़े, छोटी सूण्डी/इल्लियों का प्रकोप दिखें का प्रकोप दिखे तो नीमास्त्र का छिड़काव करके इन कीडों पर नियंत्रण पाया जा सकता है। तैयार नीमास्त्र को अच्छे से छानकर फसलों पर छिड़काव करते हैं।

नीमास्त्र से लाभ :

नीमास्त्र से फसलों को काफी लाभ होता है क्योंकि नीमास्त्र को आसानी से घर पर तैयार किया जा सकता है। नीमास्त्र को तैयार करने में जो सामग्री लगती है वों सामग्री किसानों के आसानी से उपलब्ध होती है। किसानों को इन सामग्री को खरीदने की जरूरत नहीं होती है जिससे किसानों को इसे बनाने में कुछ भी खर्च करने की जरूरत नहीं पड़ती है और किसान आसानी से एक अच्छा कीटनाशक तैयार कर लेते है। जिससे फसलों पर लगने वाले कीड़ों पर आसानी से नियंत्रण पाया जा सकता है। यह किसानों को मंहगे रसायनिक कीटनशकों से छुटकारा दिलाता है जिससे कि किसानों को रसायनिक कीटनाशकों को खरीदने पर होने वाले व्यय में कमी आती है।

अग्नि अस्त्र :

रस चूसने वाले कीड़े, छोटी सुण्डी/ इल्लियॉ होने पर नियंत्रण।

- 20 ली0 देशी गाय का गौ मूत्र।
- 5 किग्रा नीम के पत्ते।
- 500 ग्राम तम्बाकू पाउडर।
- 500 ग्राम तीखी हरी मिर्च की चटनी।
- 500 ग्राम देशी लहसुन की चटनी।

विधि :

कटे हुये नीम के पत्ते व अन्य सामग्री गौ मूत्र. में मिलाकर धीमी ऑच पर एक उबाल आने तक उबालें। मिश्रण को 48 घण्टे तक छाया में रखे व सुबह–शाम घोले। इसे कपड़े में छानकर 6 से 8 ली0 घोल 200 ली0 पानी में मिलाकर एक एकड़ की फसल पर छिड़काव करें। इसे 3 माह के अन्दर ही प्रयोग करे।